तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मूलसूत्र

हितोपदेशी   वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ   प्रयोजन - भावना

निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥ १ ॥

अर्थ : [सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि] सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, और सम्यक्चारित्र तीनों मिलाकर [मोक्षमार्गः] मोक्ष का मार्ग है, अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति का उपाय है।

सम्यग्दर्शन + सम्यग्ज्ञान + सम्यक्चारित्र = मोक्षमार्ग

तीनों की एकता ही मोक्षमार्ग है।

निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण

तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥२ ॥

अर्थ - [तत्त्वार्थश्रद्धानं] तत्त्व (वस्तु) के स्वरूपसहित अर्थ; जीवादि पदार्थों की श्रद्धा करना [सम्यग्दर्शनम्] सम्यग्दर्शन है।

तत्त्व + अर्थ + श्रद्धान = सम्यग्दर्शन

निश्चय सम्यग्दर्शन के भेद

तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥ ३ ॥

अर्थ - [तत्] वह सम्यग्दर्शन, [निसर्गात्] स्वभाव से [वा] अथवा [अधिगमात्] दूसरे के उपदेशादि से उत्पन्न होता है।

तत्त्वों के नाम

जीवाजीवास्त्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।।४ ।।

अर्थ - [जीवाजीवास्त्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षाः] १ जीव, २ अजीव, ३ आस्त्रव, ४ बन्ध, ५ संवर, ६ निर्जरा, और ७ मोक्ष—ये सात [तत्त्वम्] तत्त्व हैं।

अध्याय १: सूत्र ४ - तत्त्वों के नाम

जीवाजीवास्त्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।।४ ।। - जीव तत्त्व

- जीव, अर्थात् आत्मा।
- वह सदा ज्ञातास्वरूप, पर से भिन्न और त्रिकाल स्थायी है।
- जब वह पर-निमित्त के शुभ अवलम्बन में युक्त होता है, तब उसके शुभभाव (पुण्य) होता है,
- जब वह अशुभावलम्बन में युक्त होता है, तब अशुभभाव (पाप) होता है
- और जब स्वावलम्बी होता है, तब शुद्धभाव (धर्म) होता है।

अध्याय १: सूत्र ४ - तत्त्वों के नाम

जीवाजीवास्त्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।।४।। - अजीव तत्त्व

- जिसमें चेतना-ज्ञातृत्व नहीं है, ऐसे द्रव्य पाँच हैं।
- उनमें से धर्म, अधर्म, आकाश और काल ये चार अरूपी हैं तथा पुद्‌गल रूपी (स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण सहित) है। अजीव वस्तुएँ, आत्मा से भिन्न हैं।
- अनन्त आत्मा भी एक दूसरे से पृथक्-स्वतन्त्र हैं।
- पराश्रय के बिना जीव में विकार नहीं होता; परोन्मुख होने से जीव के पुण्य-पाप के शुभाशुभ विकारी भाव होते हैं।

अध्याय १: सूत्र ४ - तत्त्वों के नाम

जीवाजीवास्त्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।।४।। - आस्त्रव तत्त्व

- विकारी शुभाशुभभावरूप जो अरूपी अवस्था जीव में होती है, वह भावास्त्रव है।
- और नवीन कर्म-रजकणों का आना (आत्मा के साथ एक क्षेत्र में रहना), सो द्रव्यास्त्रव है।

अध्याय १: सूत्र ४ - तत्त्वों के नाम

जीवाजीवास्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।।४।। - बन्ध तत्त्व

- आत्मा का अज्ञान, राग-द्वेष, पुण्य-पाप के भाव में रुक जाना, सो भावबन्ध है।
- और उसके निमित्त से पुद्गल का स्वयं कर्मरूप बँधना सो द्रव्यबन्ध है।
- पुण्य-पाप दोनों, आस्त्रव और बन्ध के उपभेद हैं।

अध्याय १: सूत्र ४ - तत्त्वों के नाम

जीवाजीवास्त्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।।४।। - पुण्य

- दया, दान, भक्ति, पूजा, व्रत, इत्यादि जो शुभभाव जीव के होते हैं, वे अरूपी विकारीभाव हैं; वह भावपुण्य है।
- और उसके निमित्त से जड़ परमाणुओं का समूह स्वयं (अपने ही कारण से स्वतः) एक क्षेत्रावगाहसम्बन्ध से जीव के साथ बँधता है, वह द्रव्यपुण्य है।

अध्याय १: सूत्र ४ - तत्त्वों के नाम

जीवाजीवास्त्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।।४।। - पाप

- मिथ्यात्व, हिंसा, असत्य, चोरी, अव्रत इत्यादि जो अशुभभाव हैं, सो भावपाप है।
- और उसके निमित्त से, जड़ की शक्ति से जो परमाणुओं का समूह स्वयं बँधता है, वह द्रव्यपाप है।
- परमार्थत—वास्तव में ये पुण्य-पाप, आत्मा का स्वरूप नहीं हैं; वह आत्मा की क्षणिक अवस्था में, पर के सम्बन्ध से होनेवाला विकार है।

जीवाजीवास्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।।४।। - संवर तत्त्व

- पुण्य-पाप के विकारीभाव को (आस्रव को), आत्मा के शुद्धभाव द्वारा रोकना, सो भावसंवर है।
- और तदनुसार नये कर्मों का आगमन रुक जाए, सो द्रव्यसंवर है।

अध्याय १: सूत्र ४ - तत्त्वों के नाम

जीवाजीवास्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।।४।। - निर्जरा तत्त्व

- अखण्डानन्द शुद्ध आत्मस्वभाव के लक्ष्य के बल से स्वरूप-स्थिरता की वृद्धि द्वारा आंशिकरूप से शुद्धि की वृद्धि और अशुद्ध (शुभाशुभ) अवस्था का आंशिक नाश करना, सो भावनिर्जरा है।
- और उसका निमित्त पाकर जड़कर्म का अंशतः खिर जाना, सो द्रव्यनिर्जरा है।

जीवाजीवास्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।।४।। - मोक्ष तत्त्व

- अशुद्ध अवस्था का सर्वथा-सम्पूर्ण नाश होकर, आत्मा की पूर्ण निर्मल-पवित्र दशा का प्रगट होना, सो भावमोक्ष है।
- और निमित्तकारण द्रव्यकर्म का सर्वथा नाश (अभाव) होना, सो द्रव्यमोक्ष है।

अध्याय १: सूत्र ४ - तत्त्वों के नाम

जीवाजीवास्त्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।।४ ।। - विशेष

- सात तत्त्वों में से प्रथम दो तत्त्व – 'जीव' और 'अजीव' द्रव्य हैं।
- तथा शेष पाँच तत्त्व उनकी (जीव और अजीव की) संयोगी तथा वियोगी पर्यायें (विशेष अवस्थाएँ) हैं।
- आस्त्रव और बन्ध संयोगी हैं तथा संवर, निर्जरा और मोक्ष जीव-अजीव की वियोगी पर्यायें हैं।
- जीव और अजीवतत्त्व, सामान्य हैं तथा शेष पाँच तत्त्व, पर्याय होने से विशेष कहलाते हैं।

तत्त्वों के नाम के क्रम का प्रयोजन - १

- जिसकी दशा को अशुद्ध में से शुद्ध करना है, उसका नाम तो प्रथम अवश्य दिखाना ही चाहिए; इसलिए 'जीव' तत्त्व प्रथम कहा गया है।
- पश्चात् जिस ओर के लक्ष्य से अशुद्धता, अर्थात् विकार होता है, उसका नाम देना आवश्यक है; इसलिए 'अजीव' तत्त्व कहा गया है।

(– तत्त्वार्थसार, सूत्र ६, पृष्ठ ७–८, सनातन ग्रन्थमाला १७)

तत्त्वों के नाम के क्रम का प्रयोजन - २

- अशुद्धदशा के कारण–कार्य का ज्ञान कराने के लिए 'आस्त्रव' और 'बन्ध' तत्त्व कहे गए हैं।
- तत्पश्चात् मुक्ति का कारण कहना चाहिए और मुक्ति का कारण वही हो सकता है जो बन्ध और बन्ध के कारण से उल्टेरूप में हो।

(– तत्त्वार्थसार, सूत्र ६, पृष्ठ ७–८, सनातन ग्रन्थमाला १७)

तत्त्वों के नाम के क्रम का प्रयोजन - ३

- इसलिए आस्त्रव के निरोध होने को 'संवर' तत्त्व कहा है।
- अशुद्धता-विकार के एकदेश दूर हो जाने के कार्य को 'निर्जरा' तत्त्व कहा है।
- जीव के अत्यन्त शुद्ध हो जाने की दशा को 'मोक्ष' तत्त्व कहा है।

(- तत्त्वार्थसार, सूत्र ६, पृष्ठ ७-८, सनातन ग्रन्थमाला १७)

तत्त्वों के नाम के क्रम का प्रयोजन - ४

- इन तत्त्वों को समझने की अत्यन्त आवश्यकता है, इसलिए वे कहे गए हैं।
- उन्हें समझने से जीव, मोक्षोपाय में युक्त हो सकता है।
- मात्र जीव-अजीव को जाननेवाला ज्ञान, मोक्षमार्ग के लिए कार्यकारी नहीं होता। इसलिए जो सच्चे सुख के मार्ग में प्रवेश करना चाहते हैं, उन्हें इन तत्त्वों को यथार्थतया जानना चाहिए।

(- तत्त्वार्थसार, सूत्र ६, पृष्ठ ७-८, सनातन ग्रन्थमाला १७)

तत्त्वम् शब्द का भाव एवं प्रयोजन

- सात तत्त्वों के होने पर भी इस सूत्र के अन्त में 'तत्त्वम्' ऐसा एक वचन सूचक शब्द प्रयोग किया गया है।
- जो यह सूचित करता है कि इन सात तत्त्वों का ज्ञान करके, भेद पर से लक्ष्य हटाकर, जीव के त्रिकाल ज्ञायकभाव का आश्रय करने से, जीव शुद्धता प्रगट कर सकता है।

चौथे सूत्र का सिद्धान्त

- जो जीव, इन सात तत्त्वों की श्रद्धा करता है, वही अपने जीव, अर्थात् शुद्धात्मा को जानकर, उस ओर अपना पुरुषार्थ लगाकर, सम्यग्दर्शन प्रगट कर सकता है।
- इन सात (पुण्य-पाप सहित नौ) तत्त्वों के अतिरिक्त, अन्य कोई 'तत्त्व' नहीं है—ऐसा समझना चाहिए।

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र ४

विषय-वस्तु

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
निश्चय मोक्षमार्ग की व्याख्या	१	१
निश्चय सम्यग्दर्शन का लक्षण	२	१
निश्चय सम्यग्दर्शन के भेद	३	१
तत्त्वों के नाम	४	१
निश्चयसम्यग्दर्शनादि शब्दों के अर्थ समझने की रीत	५	१

जिनवाणी स्तुति